तीन धन हरा बराबर चार

यदि आप मिश्र-संवेदना के धनी हैं तो हो सकता है कि आप रंगों को जोड़ सकें। मिश्र-संवेदना वाले व्यक्ति की एक संवेदना किसी अन्य संवेदना के साथ घुल-मिल जाती है। मसलन, ऐसे व्यक्तियों के लिए संख्याओं के साथ रंग की एक-एक की संगति बैठ जाती है। उदाहरण के लिए हो सकता है कि वे हरे रंग को एक का द्योतक मानें।

ऐसे व्यक्ति समीकरणें हल करते वक्त संख्या और रंगों के बीच भेद करना भूल जाते हैं। जैसे हो सकता है कि वे कहें कि 3 में हरा जोड़ें तो चार आएगा क्योंकि उनके लिए हरे का मतलब 1 होता है। मिश्र-संवेदना के बारे में माना जाता है कि यह दिमाग में तंत्रिकाओं के गलत कनेक्शन जुड़ने से पैदा होती है। नेवाडा विश्वविद्यालय के डेनियल मैकार्थी और उनके साथी इस क्षमता को थोड़ा गहराई से समझने को उत्सुक थे। उन्होंने मिश्र-संवेदना युक्त तीन व्यक्ति खोजे और उन्हें गणित का एक टेस्ट दिया।

इनमें से हर व्यक्ति की संख्या और रंगों का सम्बंध अलग-अलग था। प्रत्येक व्यक्ति में उपस्थित विशिष्ट सम्बद्धता के अनुरूप सवाल पूछे गए। जैसे किसी व्यक्ति को समीकरण दी गई 4 + सफेद = 5, और यह बताने को कहा गया कि यह समीकरण सही है या गलत। तीनों ही व्यक्तियों ने फुर्ती से उत्तर दिए और हर बार किसी संख्या से उसी रंग का सम्बंध जोड़ा। इससे स्पष्ट था कि वे रंगों और संख्याओं को साथ-साथ जोड़कर देखते हैं।

वैसे तीन व्यक्तियों के साथ प्रयोग करके कोई व्यापक निष्कर्ष निकालना बहुत मुनासिब नहीं है मगर कुछ संकेत तो मिलते ही हैं। पहला सवाल तो यही उठता है कि क्या संख्याओं और रंगों के बीच यह सम्बद्धता उन बच्चों के सीखने को प्रभावित करती है जिनमें मिश्र-संवेदना पाई जाती है - क्या यह फायदेमंद है या नुकसानदायक? यदि किसी पुस्तक में कोई संख्या रंगीन छपी हो, और रंग व संख्या का मेल उनके हिसाब से सही न हो तो क्या यह उन्हें भ्रमित करेगा? यह भी हो सकता है कि मस्तिष्क का ध्यान इसकी वजह से भटकता रहे। मगर कुछ कहने से पहले ज़रूरी है कि कई लोगों पर यह परीक्षण किया जा सके। दिक्कत यह है कि रंग-संख्या की मिश्र-संवेदना वाले लोग इतनी आसानी से तो मिलेंगे नहीं। ***(स्रोत फीचर्स)***